स्वाइन फ्लू पुणे के सबक

डॉ. अनंत फडके

स्वाइन फ्लू की महामारी एक संकट बन कर उभरी है। इस बात की पूरी संभावना है कि आने वाले समय में यह पूरे देश में फैल जाए। पुणे में इसका ज़ोर अन्य स्थानों की तुलना में अधिक है, इसलिए यह देखना लाज़मी है कि पुणे में अब तक जो हुआ है उसके आधार पर नागरिक, सरकारी तंत्र और डॉक्टर क्या सीख ले सकते हैं।

पहली बात तो यह है कि इस महामारी के चलते चाहे सरकारी तंत्र की सीमाएं उजागर हुई हों, किंतु यह भी स्पष्ट हो गया है कि सरकारी तंत्र के होने के कारण ही इस महामारी का सामना करना संभव हो पा रहा है। यदि सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को बंद कर दिया गया होता तो इस महामारी के कारण हाहाकार मच जाता। स्वाइन फ्लू के निदान के लिए आवश्यक और बहुत महंगा रियल टाइम पी.सी.आर. परीक्षण सैकड़ों लोगों को निःशुल्क मुहैया कराना हो या एक सप्ताह में लाखों लोगों के परीक्षण के लिए विशेष केन्द्र खोलना हो, यह निजी क्षेत्र के बस की बात नहीं थी। यह शासकीय तंत्र के कारण ही संभव हो पाया था। किंतु यह भी स्पष्ट हुआ कि अशासकीय विशेषज्ञों और वालंटियर्स की मदद न लेते हुए पूरी तरह सरकारी तंत्र पर निर्भर रहने से उस तंत्र की ढिलाई, सीमित क्षमताएं और काम के बहुत अधिक बोझ का खामियाजा संकट के समय आम जनता को भुगतना पड़ता है। इस प्रकार की महामारी का सामना करने के लिए कुछ सुझाव यहां प्रस्तुत हैं।

जनता को सही और आवश्यक जानकारी दी जानी चाहिए। समाचार पत्रों में और टीवी चैनलों पर उल्टी-सीधी जानकारी दी जाने के कारण लोग भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि शासन की ओर से लोगों तक सही जानकारी पहुंचाई जाए। जैसे स्वाइन फ्लू होने का शक कब करें? शक होने पर किसके पास जाएं? सरकारी केन्द्र में किसके गले की लार का नमूना लिया जाता है? इन सब नमूनों को पुणे स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरॉलॉजी (NIV) नामक शासकीय संस्था में ही क्यों भेजा जाता है? स्वाइन फ्लू की दवा टैमीफ्लू किसे दी जाती है? ये सब सुविधाएं निजी क्षेत्र के डॉक्टरों के यहां क्यों उपलब्ध नहीं हैं? इस प्रकार की जानकारी पुणे के शासकीय अधिकारियों ने जनता तक पहुंचाई नहीं। और इस वजह से बहुत अधिक अफरा-तफरी मच गई।

नायडू अस्पताल में स्वाइन फ्लू की जांच का केन्द्र बनाया गया था, किंतु यहां केवल उन मरीज़ों के नमूने लिए जा रहे थे जो जुकाम-बुखार-खांसी से पीड़ित थे और जो पिछले आठ दिनों में विदेश यात्रा से लौटे थे या स्वाइन फ्लू के मरीज़ के सम्पर्क में आए थे। शेष लोगों को यह कह कर घर भेजा जा रहा था कि 'डरने की ज़रूरत नहीं है।' यदि इस जानकारी को मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचा दिया गया होता तो नायडू अस्पताल की 90 प्रतिशत भीड़ कम हो जाती। ऐसा न करने से हज़ारों नागरिक नायडू अस्पताल की ओर भागते रहे और बिना वजह परेशान होते रहे। बाद में पुणे नगर निगम ने स्वाइन फ्लू की जांच के लिए 23 केन्द्र शुरू कर दिए किंतु प्रारंभिक जांच के लिए निजी डॉक्टरों का सहयोग न लेने के कारण लोग अपने-अपने डॉक्टर के पास न जाते हुए सीधे जांच केन्द्रों पर पहुंच गए और परेशान होते रहे।

16 अगस्त तक निजी डॉक्टरों को यह जानकारी नहीं दी गई थी कि किस प्रकार के मरीज़ों को क्या जानकारी देकर सरकारी जांच केन्द्र में भेजना है। पुणे में 10 हज़ार डॉक्टर निजी प्रेक्टिस कर रहे हैं। अतः हमने सुझाव दिया

था कि सब समाचार पत्रों में इन डॉक्टरों के लिए जानकारी प्रकाशित की जाए। लेकिन यह नहीं किया गया। अब दूसरे नगरों में तो इस भूल को न दोहराया जाए।

लोगों को दी जाने वाली सूचनाएं भी सटीक और उपयोगी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए केवल यह कह देने से कोई फायदा नहीं होता कि 'बार-बार हाथ धोएं'। मरीज़ की खांसी के साथ निकले हुए वायरस टेबलों, कुर्सियों, बस-रेल के डंडों आदि पर फैलते हैं और 3 से 8 घंटों तक जीवित रहते हैं। घर से बाहर निकलने पर ये वायरस अपने हाथ पर आ जाएंगे ऐसा मान कर चलें और नाक-मुंह के पास हाथ न ले जाएं। घर आने पर साबुन से हाथ धो डालें।

मास्क पहनने के पीछे क्या वैज्ञानिक कारण है और उसे कैसे इस्तेमाल करें इसके बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। ऐसा न करने के कारण लोगों ने मास्क का अंधाधुंध उपयोग किया और उसकी बिक्री में मुनाफाखोरी भी हुई। (पुणे के नागरिकों के लिए जन आरोग्य अभियान ने इस विषय पर जानकारी छापकर वितरित की है। phm-india.org नामक वेबसाइट से इस जानकारी को डाउनलोड करके आवश्यक परिवर्तन करके इस्तेमाल किया जा सकता है।)

वैज्ञानिक नीति ज़रूरी

इस महामारी की रोकथाम का विज्ञान मुश्किल नहीं है। यदि सब इसे समझ लें तो यह निर्धारित करना आसान हो जाएगा कि अलग-अलग परिस्थितियों में क्या कार्रवाई की जानी चाहिए।

स्वाइन फ्लू के ठीक हो जाने पर उससे होने वाला संक्रमण भी समाप्त हो जाता है। यानी ऐसे मरीज से दूसरे व्यक्ति को यह बीमारी नहीं लगती। इसलिए यह ज़रूरी है कि इस रोग की जल्दी पहचान करके ओसेलतामीविर यानी टैमीफ्लू नामक वायरस-नाशक दवा दे कर वायरस के स्रोत को समाप्त कर दिया जाए। केवल रियल टाइम पी.सी.आर. नामक परीक्षण से ही स्वाइन फ्लू की पक्की पहचान हो सकती है। किंतु यह परीक्षण केवल NIV में ही होता है। शुरुआत में महामारी की विश्वसनीय पहचान के लिए हर संदिग्ध मरीज़ के नमूने की जांच की गई। किंतु जब यह तय हो गया कि महामारी स्वाइन फ्लू ही है, तब यह निर्णय लिया गया कि लक्षणों और डॉक्टरी जांच के आधार पर संदिग्ध सारे मरीज़ों को टैमीफ्लू गोलियां दी जाएं। यह निर्णय इसलिए सही है कि हर संदिग्ध मरीज़ के नमूने की जांच करना संभव नहीं है। केवल जांच किट का मूल्य ही 10,000 रुपए है। यदि NIV की क्षमता दुगनी कर दी जाए तो भी एक दिन में 400 से अधिक नमूनों की जांच नहीं हो सकती। यदि बहुत अधिक नमूने आ जाएं तो उनकी रिपोर्ट मिलने में पांच से सात दिन भी लग सकते हैं।

टैमीफ्लू की गोलियां बीमारी के पहले दो दिनों में ही दी जाने पर फायदा होता है। अतः अब यह तय किया गया है कि सभी संदिग्ध मरीज़ों के नमूने लेने की बजाय कुछ निर्धारित लक्षणों वाले सभी मरीज़ों को तुरंत टैमीफ्लू देना शुरू कर दिया जाए। सभी नागरिकों का यह कर्तव्य है कि इस निर्णय का समर्थन करें। हर मरीज़ के नमूने की जांच करने या हर मरीज़ के लिए टैमीफ्लू देने का आग्रह न करें। सरकार के पास टैमीफ्लू सीमित मात्रा में उपलब्ध है। इसका उपयोग सावधानीपूर्वक करना ज़रूरी है। इसके अलावा यदि इस दवा का उपयोग अनियंत्रित रूप से किया गया तो यह संभव है कि विषाणु में दवा का प्रतिरोध विकसित हो जाए। यदि ऐसा हुआ तो देश के सामने बड़ा भारी संकट खड़ा हो जाएगा।

स्वाइन फ्लू के अधिकांश मरीज़ बिना टैमीफ्लू लिए ही ठीक हो जाते हैं। यदि निमोनिया या अन्य कोई रोग साथ में हो जाए तो कुछ मरीज़ों की जान को खतरा हो सकता है। यदि सांस में तकलीफ या अन्य कोई गंभीर लक्षण हो तो कुछ ही घंटों में सरकारी केन्द्र से टैमीफ्लू की गोलियां

मरीज़ को मिलना और उसे अस्पताल में भर्ती करना ज़रूरी होता है। असली कठिनाई यह होती है कि पहले से कहना मुश्किल होता है कि किस मरीज़ को निमोनिया हो जाएगा।

इस महामारी के नियंत्रण का एक अन्य तरीका है वायरस के फैलाव को रोकना। मरीज़ की सांस के साथ बाहर निकलने वाले वायरस से उसके सम्पर्क में रहने वाले लोगों को बीमारी लग सकती है यानी संक्रमण हो सकता है। अतः मरीज़ों को अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। किंतु स्वाइन फ्लू के लक्षण मरीज़ में दिखाई देने से एक दिन पहले ही उसकी सांस के द्वारा दूसरे लोगों को संक्रमण होना शुरू हो जाता है। अतः कारगर उपाय यही है कि भीड़भाड़ वाले स्थानों से बचा जाए। स्कूलों में बच्चे लम्बे समय तक एक दूसरे से सट कर बैठते हैं। अतः महामारी फैलने का खतरा मालूम होते ही सभी शैक्षणिक संस्थाओं, सार्वजनिक कार्यक्रमों, धार्मिक उत्सव आदि को बंद कर देना चाहिए। यदि महामारी और अधिक फैलती है तो कार्यालय, बाज़ार आदि भी बंद करना होगा। किंतु इसको लेकर कोई गणितीय मापदंड नहीं है। परिस्थिति की कुल गंभीरता को ध्यान में रखते हुए निर्णय करना होगा। यदि आठ दिनों तक पूरा शहर बंद कर दिया जाए तो बहुत अधिक आर्थिक नुकसान तो होगा ही, दैनिक आजीविका कमाने वालों को भूखे रहने की नौबत आ जाएगी।

कुछ दिनों के बाद इस महामारी पर काबू पा लिया जाएगा। हम सबको इससे लड़ने का प्रयास तो करना ही है, किंतु इसमें होने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया को भी समझना ज़रूरी है। सभी सावधानियां बरतने के बावजूद कुछ हद तक वायरस का फैलाव तो होता ही है।

जिन लोगों को वायरस कम मात्रा में संक्रमित करते हैं या जिन लोगों की रोगों से लड़ने की क्षमता अच्छी होती है उन्हें या तो बीमारी होती ही नहीं है या बहुत हुआ तो बीमारी के हल्के लक्षण उभरकर उनमें वायरस का प्रतिरोध करने की क्षमता आ जाती है। ये लोग वायरस को रोकने के लिए एक दीवार की तरह काम करेंगे और महामारी पर नियंत्रण पाया जा सकेगा। तब तक यदि ऊपर दिए गए उपायों को सब मिल कर अपनाएं तो स्वाइन फ्लू से होने वाली बीमारी और मौतों को कम किया जा सकेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत दिसम्बर 2009
अंक 251

- **इस साल के विज्ञान नोबल पुरस्कार**
- **स्वाइन फ्लू के बहाने वादियान फूल की बातें**
- **विवादों में फंसी गरीबी रेखा**
- **एनेस्थिसिया यानी बेहोश करने की कला**
- **संजीवनी - कितना सच कितना मिथक**